IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी विषय में की जाने वाली वर्तनीगत अशुद्धियों के कारण

शोधार्थी

राजेश कुमार फुलवारिया

शिक्षा विभाग,

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

शोध निर्देशिका

प्रो. (डॉ.) मीनू अग्रवाल

ऐसोसिएट प्रोफेसर

श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय,

जामड़ोली, जयपुर

भाषा यादृच्छिक वाचिक ध्वनि संकेतो की वह पद्धति है जिसके माध्यम से समाज के लोग आपस में विचार विनिमय (वार्तालाप) करते हैं। **"भाषा में शब्द रूप ज्योति समस्त संसार में प्रदीप्त न हो तो सम्पूर्ण संसार अज्ञान के सघन अन्धकार में लीन हो जाए"** काव्यादर्श के उक्त कथन के अनुसार भाषा के प्रभाव से ही यह संसार अज्ञान रूपी अन्धकार से बचा है। कोई भी मनुष्य दूसरों के ज्ञान को दो तरह से ग्रहण कर सकता हैं पढ़कर और सुनकर प्रायः देखा जाता है कि मनुष्य लिखते व बोलते समय कई वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ करते हैं। जिससे अर्थ का अनर्थ हो जाता है। भाषा सीखने का स्वर्णिम काल उच्च प्राथमिक स्तर को माना गया है। उच्च प्राथमिक स्तर पर वर्तनीगत अशुद्धियों को अगर उचित कारण जानकर यदि किसी शब्द के रूप को बालकों के स्मृति पटल पर ठीक प्रकार से अंकित कर दिया जाए तो वे अक्षर विन्न्यास (वर्तनीगत) सम्बन्धी अशुद्धियाँ नहीं करेंगे।

शुद्ध अक्षर विन्न्यास व्यक्ति की अभिव्यक्ति को सशक्त बनाता है अतएव भाषा अध्यापक को चाहिए कि वह उच्च प्राथमिक स्तर पर ही बालकों के अक्षर विन्न्यास की अशुद्धियों का निराकरण करके उनकी अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने का प्रयास करे।

उच्च प्राथमिक स्तर पर बालक समझदारी की ओर अग्रसर होता है। शुद्ध भाषा का प्रयोग व्यक्ति की अभिव्यक्ति को सशक्त बनाना हैं अक्षर विन्न्यास में यदि सन्देह बना रहे तो व्यक्ति अपने आपको ठीक तरह सें अभिव्यक्त नहीं कर पाएगा अतः वर्तनी भाषा शिक्षण का एक आवश्यक अंग है। इसलिए वर्तनीगत शिक्षा उच्च प्राथमिक स्तर पर महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य विषय है इसका

प्रावधान होने पर भी छात्रों द्वारा अत्यधिक वर्तनीगत अशुद्धियाँ की जाती है जिसके मुख्य रूप से निम्न कारण है।

वर्तनीगत अशुद्धियों के कारण –

सामान्यतः लिपि के ज्ञान के अभाव में अशुद्धियाँ हो जाती है जैसे विद्यार्थी को विधार्थी, गृहकार्य को ग्रहकार्य, ऋषि को रिषि, नरक को नर्क लिख देते हैं।

पंचम वर्ण के ज्ञान का अभाव –

पंचम वर्ण के ज्ञान के अभाव में अंक को अक, सम्मान को संमान, सम्बन्ध को संबंध लिख देते हैं।

व्याकरण की अनभिज्ञता –

हिन्दी वर्तनी में बहुत सी अशुद्धियाँ हिन्दी भाषा के व्याकरण की अनभिज्ञता के कारण होती है। उदाहरण – उज्ज्वल को उज्वल, श्रीमती को श्रीमति, उपर्युक्त को उपरोक्त लिख देते हैं।

वातावरण का प्रभाव –

दुकानों, मोहरों, दीवारों आदि पर बहुत अशुद्ध शब्द लिखे रहते हैं, जिनको बार –बार पढ़ने से अशुद्ध रूप हमारे मस्तिष्क में बैठ जाते हैं, फलस्वरूप वर्तनी अशुद्ध हो जाती है जैसे मिठाई की दुकान पर मिष्ठान भण्डार लिखा होता है जो अशुद्ध है शुद्ध शब्द मिष्टान्न भण्डार होता है।

लेखन में असावधानी –

शिरोरेखा खींचते समय थोड़ी सी असावधानी भ को म या म को भ बना देती है जैसे भगवान को मगवान इसी प्रकार ड को इ तथा 'इ' को 'ड' लिख दिया जाता है।

मात्राओं का सही ज्ञान न होना –

मात्राओं के पर्याप्त ज्ञान के अभाव में छात्र रश्मि (शुद्ध) को रश्मी (अशुद्ध) तथा बबूल को बबुल श्रीमती को श्रीमति, परीक्षा को परिक्षा एवं महीना को महिना लिख देते हैं।

अशुद्ध उच्चारण –

शिक्षक द्वारा किये गये अशुद्ध उच्चारण के कारण भी विद्यार्थी अशुद्धियाँ कर देते हैं। जैसे श, ष, स, सम्बन्धी अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण न होने के कारण प्रकाश को प्रकास, सुशोभित को सुसोभित, विशेष को विशेस लिख देते हैं।

असावधानी एवं जल्दबाजी –

कई विद्यार्थी असावधानी एवं जल्दबाजी में उल्लंघन को उलंघन, अध्ययन को अध्यन, उज्ज्वल को उज्जवल लिख देते हैं।

क्षेत्रीय/या ग्रामीण प्रभाव –

क्षेत्रीय या ग्रामीण प्रभाव के कारण विद्यार्थी स्कूल को इस्कूल, यजमान को जजमान, धोखा को धोका, सेब को सेव लिख देते हैं।

(क) अक्षरों का अज्ञान –

ह्रस्व व दीर्घ स्वर का अन्तर न जानने के कारण अशुद्धियाँ हो जाती है यथा –

(कोष्ठक के बाहर अशुद्ध शब्द है एवं कोष्ठक के अन्दर शुद्ध शब्द है।)

- **अ, आ सम्बन्धी अशुद्धियाँ**– समाजिक (सामाजिक), व्यवसायिक (व्यावसायिक) अध्यात्मिक (आध्यात्मिक) आदि।
- **इ, ई सम्बन्धी अशुद्धियाँ –** शान्ती (शान्ति), हरी (हरि), कवी (कवि), परिक्षा (परीक्षा) । कवयीत्रि (कवयित्री) आदि ।
- **उ,ऊ सम्बन्धी अशुद्धियाँ**–साधु (साधू), मधु, (मधू), शुन्य (शून्य) वधु (वधू) आदि।
- **ए, ऐ, ओ, औ सम्बन्धी अशुद्धियाँ –** ऐनक (ऐनक), ऐतिहासिक (ऐतिहासिक), ओरत (औरत) आदि।
- **ऋ र् र सम्बन्धी अशुद्धियाँ**– आर्शीवाद (आशीर्वाद) ग्रहकार्य (गृहकार्य) आदि।
- **अनुस्वार** – पन्च (पंच), दन्ड (दण्ड) आदि।
- **लोप, आगम, सम्बन्धी अशुद्धियाँ** –उद्देश (उद्देश्य), द्वन्द (द्वन्द्व), स्वास्थ(स्वास्थ्य) आदि।

(ख) शिक्षक द्वारा अशुद्ध उच्चारण करना –

कई स्थितियों में शिक्षक के द्वारा किए गए अशुद्ध उच्चारण का भी प्रभाव छात्रों पर पड़ता है यदि वह छात्रों के समक्ष अशुद्ध उच्चारण करता है तो छात्र भी अशुद्ध उच्चारण करते हैं एवं लिखते हैं। जैसे – श, ष, स, की अशुद्धियों का कारण उच्चारण दोष है (कोष्ठक में शुद्ध शब्द है) जैसे अवकास (अवकाश) प्रसंसा (प्रशंसा) प्रशाद (प्रसाद) विशेस (विशेष)

(ग) शिक्षक के द्वारा छात्रों पर ध्यान न देना –

शिक्षक के द्वारा गृहकार्य जॉच करते समय यदि समय पर छात्र को ना टोका जाए तो भी छात्र वर्तनी गत त्रुटियाँ करते हैं।

(घ) स्थानीय प्रभाव –

स्थान के प्रभाव को भी अस्वीकारा नहीं जा सकता। कई स्थितियों में स्थानीय प्रभाव के कारण भी वर्तनीगत त्रुटियाँ हो जाती है। जैसे शेखावाटी में प्रतिमा को परतिमा ही बोलते व लिखते हैं।

हिन्दी की यह विशेषता है कि यह जैसे बोली जाती हैं वैसे ही लिखी जाती हैं इसलिए अनभिज्ञता, ध्यान में कमी एवं स्थानीय प्रभाव के फलस्वरूप त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। किन्तु भाषा के उच्चारण व वर्तनी के अशुद्ध होने पर भाषा का स्वरूप भी अशुद्ध होने लगता है जिसका ध्यान रखा जाना चाहिए। तथा शुद्ध भाषा को ही अंगीकार करना चाहिए।

अतः उपर्युक्त व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों के कारणों का निवारण उच्च प्राथमिक स्तर पर ही अध्यापक को करना चाहिए। आज अधिकांश विद्यार्थी व्याकरण की उपेक्षा करते हैं। विद्यार्थी उच्च डिग्री (बी.ए. एवं एम.ए.) कर लेने के पश्चात भी न तो शुद्ध भाषा लिख पाते हैं। और न शुद्ध भाषा बोल सकते है। उनके लेखन में वर्तनी की अशुद्धियाँ पायी जाती है अतः उच्च प्राथमिक स्तर से ही उपर्युक्त व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों के कारणों का निवारण कर व्याकरण की शिक्षा दी जाए तो यह विद्यार्थियों एवं समाज के लिए हितकारी होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

- डॉ. भारती खुबालकर : 'आधुनिक हिन्दी व्याकरण स्वरूप एवं प्रयोग' साहनी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- पाण्डेय, रामशकल 'हिन्दी शिक्षण' विनोद पुस्तक मन्दिर 1975.

- भावुक, (डॉ.) कृष्णा, 'आधुनिक हिन्दी कवियों के शब्द प्रयोग', जालन्धर, हिन्द भूमि प्रिन्टिंग प्रेस, 1970.
- बाहरी, हरवेद : 'शुद्ध हिन्दी उच्चारण, वर्तनी, व्याकरण', इलाहबाद, पियरलेस प्रिन्टिंग बाई बाग, बाग, 1965.
- जीत, भाई योगेन्द्र : 'हिन्दी भाषा शिक्षण', आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, 1964.
- कपूर बद्रीनाथ : 'आजकल की हिन्दी', वाराणसी, शब्दलोक प्रकाशन, 1966.
- वाजपेयी, किशोरीदास : 'हिन्दी शब्दानुशासन', वाराणसी, काशी नगरी प्रचारिणी सभा।
- वाजपेयी, किशोरीदास : 'हिन्दी शब्द मीमांसा', मेरठ, मीनाक्षी प्रकाशन, 1968
- वर्मा रामचन्द्र : 'अच्छी हिन्दी', इलाहाबाद, लोक भारती प्रकाशन,1970.
- डॉ. हरिप्रसाद पाण्डेय : 'हिन्दी ज्ञान विकास' शील सन्स, जयपुर।